International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.972 Volume 10, Issue 11, Nov 2023
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

कामकाजी महिलाओं के अपने परिवार के साथ संबंधों पर पड़ने वाले प्रभावों की जांच करना

Ranjana Ajabrao Nakshine
Research Scholar Shri JJT University
Dr. Savita Sangwan
Associate Professor Department of Humanities & Social Sciences
Research Supervisor Shri JJT University, Jhunjhunu, Rajasthan

सार

अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया है की कार्यरत महिलाओं का पारिवारिक समायोजन है कि नही इस शोध पत्र के माध्यम से कार्यरत महिलाओं के पारीवारिक समायोजन, उनकी दोहरी भूमिका का निर्वहन व उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया जायेगा। कार्योजित महिलाओं को सामान्य कोटा प्रतिदर्शन प्रविधि के द्वारा लिया गया है। इस प्रकार अध्ययन से सम्बन्धित कुल 300 महिलाओं को अध्ययन प्रतिदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। यह कहा जा सकता हैकि महिलाओं के कार्यशील जीवन का प्रभाव परिवार पर पड़ रहा है। यह बच्चों और पतियों की जिम्मेदारी भली–भाँति निभा लेती हैं परन्तु सास–ससुर से इनके सम्बन्ध में तनाव आ रहा है। आज समाज के रचनात्मक निर्माण में महिला श्रमिकों का विरोध योगदान है। सरकार द्वारा कार्यशील महिलाओं के कल्याण की विभिन्न योजनाएं तो अनेक बनाई गई, लेकिन उन पर क्रियान्वयन सही नही हो पाया है जिससे आज महिला श्रमिक सरकार की ओर निहार रही है। आज विश्व में नारी मुक्ति आंदोलन का प्रभाव क्षेत्र व्यापक हो गया है। आर्थिक दृष्टि से भी आज महिलाओं में आत्मनिर्भरता की भावना का संचार हो गया है। लेकिन भारत में स्त्रियों के भाग्य का निर्णय अभी भी उनके पति या परिवार के हाथों में होता है। कामकाजी महिलाओं की समस्या पर चर्चा करते समय उनकी घरेलू जिन्दगी भी इसके अंदर समाहित हो जाती है।

कीवर्ड– कामकाजी महिला, आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक, प्रभाव

1. प्रस्तावना

बदलते वक्त ने महिलाओं को आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया है और उनकी हैसियत एवं सम्मान में वृद्धि हुई है। इसके बावजूद अगर कुछ नहीं बदला तो वह है महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारी। खाना बनाना और बच्चों की देखभाल अभी भी महिलाओं का ही काम माना जाता है। यानी अब महिलाओं को दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ रही है। इन महिलाओं को अपने कार्यक्षेत्र और घर, दोनों को संभालने के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ रही है। कई महिलाएं घर और ऑफिस के बीच सामंजस्य बिठाने में दिक्कत महसूस करती है और बाद में नौकरी छोड़ देती हैं। उनके अनुसार पुरा दिन ऑफिस में, घंटो ट्रेन–ऑटो में और इसके बाद घर के कामकाज के बीच तालमेल बिठाना मुश्किल होता है। अगर परिवार के अन्य सदस्य भी घर की जिम्मेदारियाँ आपस में बांट ले तो महिलाओं का दोहरा बोझ थोड़ा कम हो सकता है और पुरे परिवार के लिए एक सुखमय जीवन का निर्माण हो सकता है।

आज समाज में जगरूकता लायी जा रही है सैकड़ों सामाजिक संगठन इस बदलाव की दिशा में काम कर रह हैं, आप भी बदलाव का साथी बनकर अपने घर परिवार को खुशहाल बनाने में सहयोग दे सकते हैं। पति–पत्नि

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

एक गाड़ी के दो पहियों के समान हैं, दोनों को समानता से आगे बढ़ते रहने की बहुत जरूरत है। उन्हें घर से बाहर तक की सभी जिम्मेदारियों को आपस में बाँटना चाहिए, इसी से हम बेहतर कल की उम्मीद कर सकते हैं।

''महिलाओं की स्थिति ही किसी देश के स्वरूप को निश्चित करती है।'' मानव समाज में नारी के योगदान को नकारा नहीं जा सकता । मानव सभ्यता के हर दौर में नारियों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है और अपनी पहचान को बनाए रखा है। किसी भी समाज का सर्वागीण विकास तभी माना जाता है जब उसमें महिलाओं की बराबर की भागीदारी होती है। भारतीय समाज में महिलाओं की लगभग आधी आबादी है और देश की आधी आबादी को विकास की प्रक्रिया में भागीदारी मुहैया कराए बिना किसी देश की समृद्धि, सुदृढ़ सामाजिक संरचना एवम् सर्वागीण विकास की कल्पना करना भी अव्यवहारिक होगा। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ पर महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं चल रही और अपनी विजयी की उपस्थिती नहीं दे रही। हमारा समाज शुरू से ही पुरूष प्रधान समाज रहा है और जिसने हमेशा से ही महिलाओं को दबाने की कोशिश की है। जब भी महिलाओं द्वारा अपने हक की लड़ाई का बीड़ा उठाया गया है, पुरूष प्रधान समाज के द्वारा बड़ी आसानी से उसे कुचल दिया गया है। देश की आधी आबादी होने के बाबजूद भी महिलाओं से हमेशा ही दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता रहा है। इस समाज को चलाने वाली महिला है, लेकिन उसकी अपनी कोई पहचान इस समाज में नहीं है उसे हमेशा दूसरों के साथ जोड़कर देखा जाता है कभी पिता के साथ तो कभी पति के साथ।

2. सम्बंधित साहित्य

बंगुरा, प्रिसिला और मैम्बो, एलिस. (2023) शिक्षा तक समान पहुंच की गारंटी देने के अंतरराष्ट्रीय प्रयासों के बावजूद, लड़कियों और महिलाओं को अभी भी अच्छी शिक्षा प्राप्त करने में परेशानी होती है, खासकर अफ्रीकी देशों में। आर्थिक स्थिति में असमानताएं, सांस्कृतिक प्रथाएं, पूर्वाग्रही विचार और कम उम्र में विवाह सभी महिलाओं को पुरुषों के समान शिक्षा तक पहुंच प्राप्त करने से रोकते हैं। मानव पूंजी सिद्धांत के अनुसार, शिक्षा और कौशल विकास लोगों को अधिक उत्पादक बनने में मदद कर सकता है।घरेलू और राष्ट्रीय स्तर पर निरंतर आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए महिला शिक्षा में आने वाली बाधाओं को दूर करना महत्वपूर्ण है। शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया।

असदुल्लाह, एमडी और यास्मीन, मीनारा. (2022) महिलाओं की शिक्षा का एक बड़ा सामाजिक प्रभाव है। सबसे स्पष्ट सामाजिक–आर्थिक लाभ प्रजनन दर में कमी, शिशु और मातृ मृत्यु दर और अन्य हैं। सभी लिंग के व्यक्तियों के लिए समान अधिकार और अवसर प्रदान करने के लिए, शैक्षिक लिंग अंतर को बंद करना लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है और कक्षा के भीतर और बाहर दोनों जगह महत्वपूर्ण है। विकास के उच्च स्तर, जैसे कि अर्थव्यवस्था की वृद्धि, किसी क्षेत्र में शिक्षित महिलाओं के अनुपात में वृद्धि से संबंधित हैं। महिलाओं की शिक्षा से उनकी आय बढ़ती है, जिससे अर्थव्यवस्था को गति मिलती है। महिलाओं का सशक्तिकरण उनकी शिक्षा से आता है। इस कम साक्षरता दर से महिलाओं का जीवन, उनके परिवार और देश की अर्थव्यवस्था सभी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित होते हैं।

एस, पोन शैलजा और श्रीवास्तव, डॉ. नेहर्शी और रवींद्रन, राम्या। (2022) शोध का लक्ष्य यह जांच करना था कि किशोर कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं के साथ समस्या–समाधान, संचार, भूमिकाएं, भावनात्मक प्रतिक्रिया, स्नेहपूर्ण जुड़ाव, व्यवहार नियंत्रण और संयुक्त परिवार के समग्र कामकाज को कैसे समझते हैं। पूर्व–पोस्ट फैक्टो अनुसंधान डिजाइन जांच के लिए उपयोग की जाने वाली पद्धति है। परिणामों से पता चलता है कि परिवार के कामकाज के बारे में किशोरों की धारणा के अनुसार, संयुक्त परिवारों की कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं के बीच समस्या–समाधान, संचार, भावनात्मक प्रतिक्रिया, भावनात्मक भागीदारी और सामान्य कामकाज की धारणा के संदर्भ में महत्वपूर्ण अंतर है। हालाँकि, भूमिकाओं और व्यवहार नियंत्रण में कोई स्पष्ट भिन्नता नहीं दिखी।

थॉमस, बिगी और पुल्ला, वेंकट। (2022) दुनिया भर में महिलाएं कोविड–19 महामारी से काफी प्रभावित हुई हैं, जिसने उनके लिए कार्य–जीवन संतुलन को लेकर विभिन्न समस्याएं पैदा कर दी हैं। घरेलू परिवेश में नौकरी और पारिवारिक जिम्मेदारियों के संगम के कारण भारतीय महिलाओं को विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ

निभाने की आवश्यकता पड़ी। विवाहित महिलाओं को पितृसत्तात्मक सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में, जिसमें वे रहती हैं। इन क्षेत्रों के बीच स्विच करने की उनकी क्षमता भी महामारी के कारण कार्य और घरेलू क्षेत्रों के विलय से बाधित हुई है।

अफौनेह, (2022) इस अध्ययन का उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों में काम करने वाली फिलिस्तीनी महिलाओं पर ब्टप्क–19 के प्रभावों की जांच करना है। इसके अलावा, उनके व्यक्तिगत, व्यावसायिक और शैक्षणिक जीवन के अच्छे और बुरे हिस्सों पर भी नजर डालें। कामकाजी महिलाओं पर कोविड–19 के प्रभाव की जांच अनुक्रमिक मिश्रित विधि तकनीक का उपयोग करके की गई। शोध के चरण चरण का गुणात्मक चरण कामकाजी महिलाओं के जीवन के अनुभवों की जांच करने के लिए फोकस समूह सत्रों के साथ शुरू हुआ। इसके अतिरिक्त, पहले चरण के परिणामों का उपयोग अध्ययन के दूसरे चरण के लिए एक मात्रात्मक उपकरण बनाने के लिए किया गया था।

3. शोध प्रारूप

3.1 शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन एक आनुभाविक अध्ययन है। इसके अन्तर्गत विवरणात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग किया गया है।

3.2 आंकड़ों का संकलन

आंकड़ों के संकलन के लिए शोधार्थी द्वारा प्राथमिक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। इसके अन्तर्गत असहगामी अवलोकन एवं मौखिक अध्ययन के साथ–साथ शोध विषय की मूलभूत समस्याओं को ध्यान में रखकर साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गयी है।

द्वितीयक स्रोतों के अन्तर्गत शोध विषय से सम्बन्धित पुस्तकें, शोध ग्रन्थ, अभिलेखों, सरकारी रिपोर्ट, पत्र–पत्रिका, जनगणना प्रतिवेदन, समाचार पत्र, इण्टरनेट इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

3.3 न्यादर्श

कार्योजित महिलाओं को सामान्य कोटा प्रतिदर्शन प्रविधि के द्वारा लिया गया है। इस प्रकार अध्ययन से सम्बन्धित कुल 300 महिलाओं को अध्ययन प्रतिदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।

4. आंकड़ों का विश्लेषण

शिक्षा

शिक्षा समाज में जटिल राजनैतिक प्रक्रियाओं को समझने तथा उनमें अर्थपूर्ण सहभागिता करने के लिए भी महत्वपूर्ण है । क्योकि यही एक साधन जिससे व्यक्ति अपने सामाजिक, राजनीतिक एवं पर्यावरण को समझ सकता है तथा अपने को उसमें समायोजित कर सकता है। शिक्षा का अत्याधिक प्रभाव होने के कारण ही समाज के लोग शिक्षित होने की आकांक्षा रखते हैं तथा अपने हर सम्भव साधनों का प्रयोग शिक्षा के लिए करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा आधुनिक व्यावसायिक संरचना में व्यक्ति के प्रकारात्मक महत्व को स्वीकार करते हुए वर्तमान अध्य्यन में उत्तरदातियों की शैक्षणिक स्थिति का अध्य्यन किया गया है।

सारणी संख्या 1. शिक्षा के आधार पर कार्यशील महिलाओं का वर्गीकरण

शिक्षा	संख्या	प्रतिशत
अनपढ़	20	6ण्67
प्राइमरी शिक्षा	30	10
जु० हा० स्कूल	42	14
इन्टर	60	20
स्नातक	90	30
स्नातकोत्तर	58	19ण्33
योग	300	100ण्00

सारणी को देखने से पता चलता है कि प्राइमरी वर्ग समूह की कार्यशील महिलायें 10.00 प्रतिशत है। 14.00 प्रतिशत कार्यशील महिलायें जु० हा० स्कूल वर्ग समूह की हैं। 20.00 प्रतिशत महिलायें इन्टर वर्ग समूह की हैं। 6.67 प्रतिशत महिलायें अनपढ़ हैं। 30.00 प्रतिशत स्नातक वर्ग समूह की महिलायें हैं। 19.33 प्रतिशत स्नातकोत्तर वर्ग समूह की महिलायें हैं ।

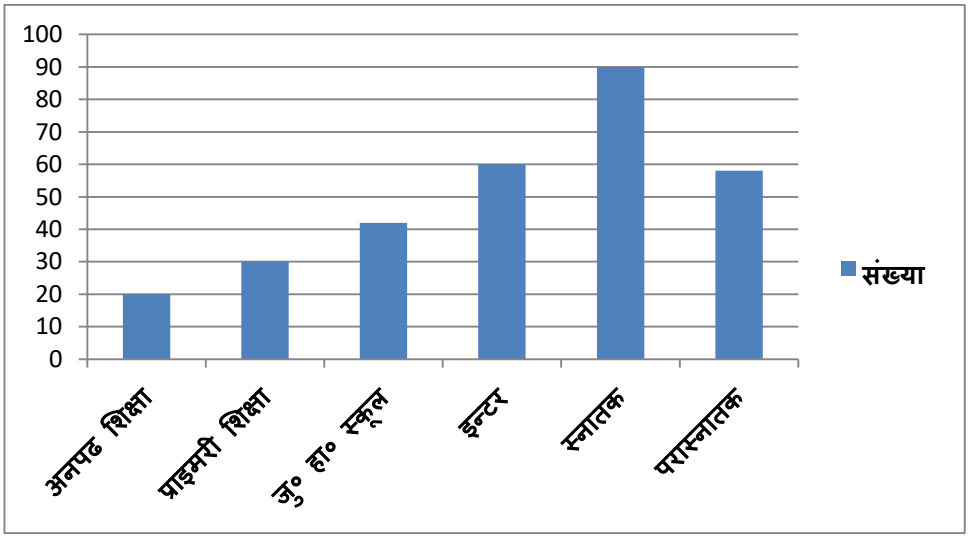

चित्र 1. शिक्षा के आधार पर कार्यशील महिलाओं का वर्गीकरण

वैवाहिक स्थिति :–

विवाहित व्यक्ति जिम्मेदारी भूमिका की अदायगी तथा प्रकार्य तुलनात्मक दृष्टि से वृहद हो जाती है, उन्हे भौतिक वैवाहिक जीवन के लक्ष्यों तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा करना पड़ता है। वैवाहिक स्थिति सामाजिक भावनाओं तनावों का स्रोत हो सकती है। जीवन में विवाहित संस्था के इसी महत्व को देखते हुए कार्यशील महिलाओं के वैवाहिक स्थिति का अध्ययन किया गया है।

सारणी संख्या 2. वैवाहिक स्थिति के आधार पर कार्यशील महिलाओं का वर्गीकरण

वैवाहिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
विवाहित	276	92
अविवाहित	24	8
विधवा	0	0
तलाकशुदा	0	0
योग	300	100ण्00

उपरोक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अधिकतम महिलायें 92.00 प्रतिशत विवाहित हैं। तथा 8.00 प्रतिशत अविवाहित महिला वर्ग समूह की हैं।

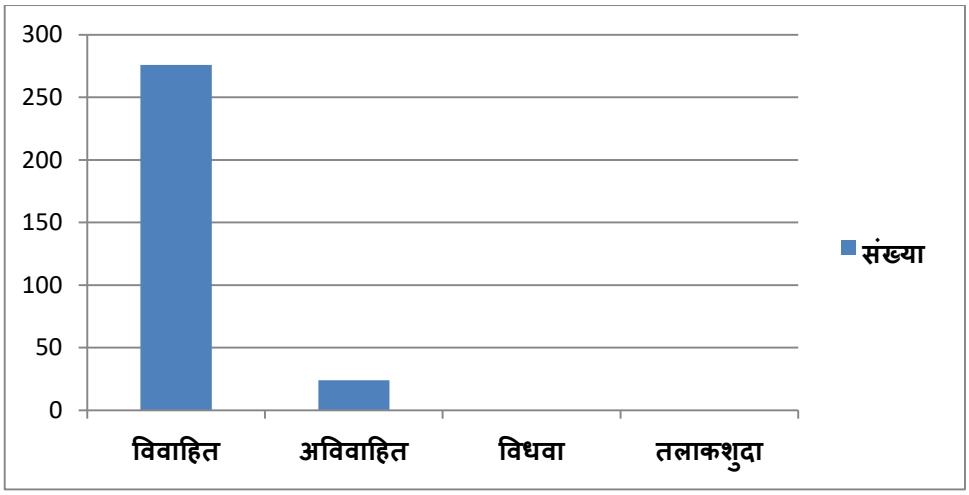

चित्र 2. वैवाहिक स्थिति के आधार पर कार्यशील महिलाओं का वर्गीकरण

श्रमिक महिलाओं के परिवार के सदस्यों का विरोध

सारणी संख्या 3. श्रमिक महिलाओं के परिवार के सदस्यों का विरोध

	संख्या	प्रतिशत
पति	66	22
सास	105	35
ससुर	84	28
जेठ–जेठानि	45	15
योग	300	100ण्00

उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि सबसे अधिक 35: कार्यशील महिलाओं की सास ने 28: के ससुरों ने, 22: के पतियों ने एवं सबसे कम 15: कार्यशील महिलाओं के जेठ–जेठानियों ने इनके नौकरी का विरोध किया।

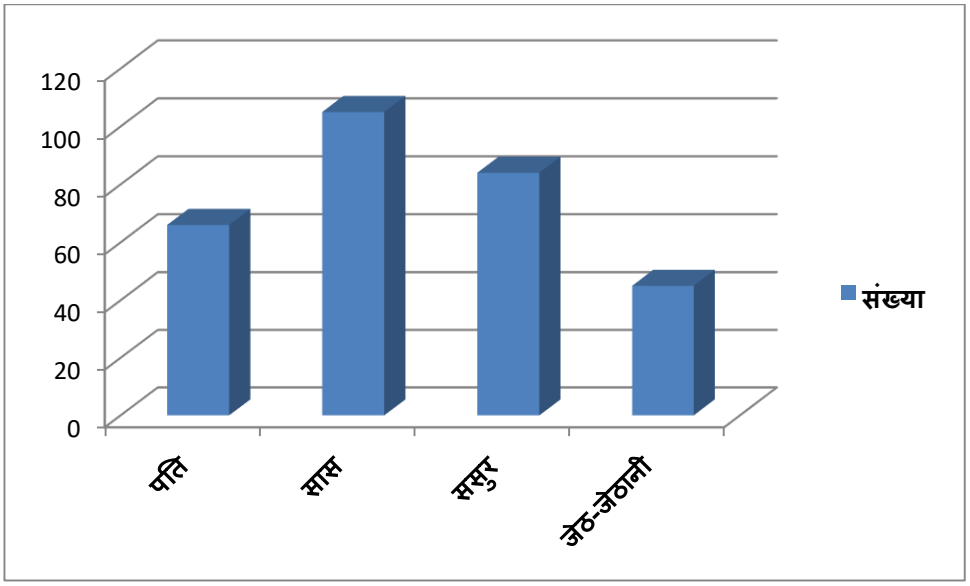

चित्र 3. श्रमिक महिलाओं के परिवार के सदस्यों का विरोध

नौकरी के परिपेक्ष्य में सास– ससुर से संबंध

इसके साथ ही साथ शोधकर्ता ने यह जानना चाहा कि कार्यशील महिलाओं के नौकरी के परिपेक्ष्य में उनके सास– श्वसूर का संबंध कैसे रहे, इस प्रश्न कार्यशील महिलाओं ने जो उत्तर दिया वह निम्नानुसार है –

सारणी संख्या 4. नौकरी के परिपेक्ष्य में सास– ससुर से संबंध

	संख्या	प्रतिशत
संतोषजनक	87	29
सामान्य	171	57
असंतोषजनक	42	14
योग	300	100ण्00

उपरोक्त तालिका के माध्यम से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक 57: कार्यशील महिलाओं की सास ससुर से संबंध सामान्य, 29: कार्यशील महिलाओं की सास श्वसुर से संबंध संतोषजनक रहा वहीं दूसरी 14: कार्यशील महिलाओं का अपने सास– श्वसुर से संबंध नौकरी करने के परिपेक्ष्य में असंतोषजनक रहा।

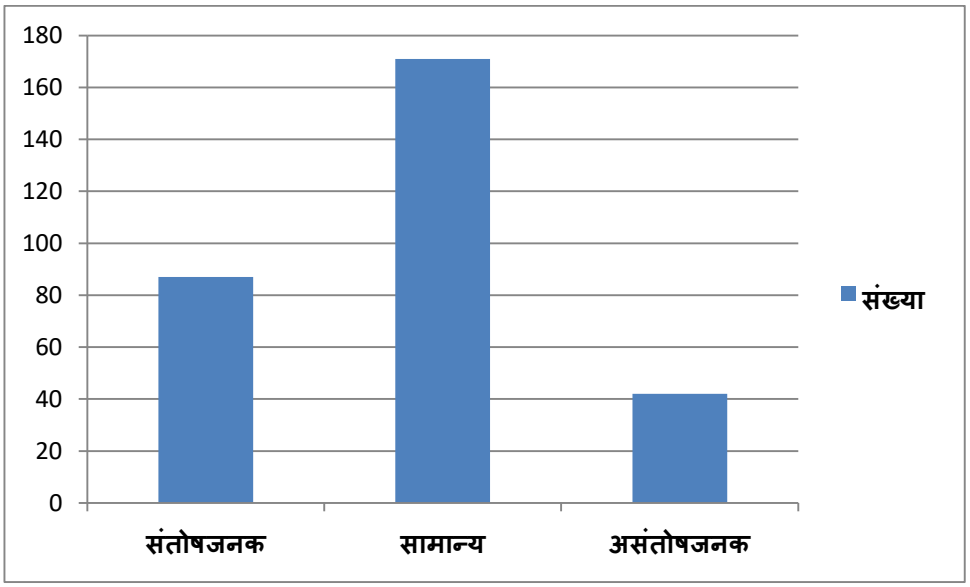

चित्र 4. नौकरी के परिपेक्ष्य में सास– ससुर से संबंध

पूर्व तालिका क्रमांक 3 एवं 4 में वर्णित क्रमशः परिवार के सदस्यों का विरोध एवं सास– श्वसुर का नौकरी करने के परिपेक्ष्य में कार्यशील महिलाओं से संबंध के बारे में जानकारी प्राप्त करने पश्चात शोधकर्ता ने यह जानना चाहा कि कार्यशील महिलाओं के परिवार के किसी वरिष्ठ सदस्य का यदि उनके नौकरी के परिपेक्ष्य में विरोध रहा

कार्यरत महिलाओं के लिये कार्य सुविधा

सारणी संख्या 5. कार्य स्थल पर उपलब्ध सुविधाएं

	संख्या	प्रतिशत
पूर्णतया संतुष्ट	18	6
संतुष्ट	30	10
तटस्थ	27	9
असंतुष्ट	123	41
पूर्णतया असंतुष्ट	102	34
योग	300	100ण्00

तालिका क्रमांक में वर्णित आंकड़ों से यह पता चलता है कि 34ः महिलाएं कार्यस्थल पर उपलब्ध सुविधाओं से पूर्णतया संतुष्ट है। 09ः महिलाएं ने सुविधाओं के बारे में तटस्थता जाहिर की। 10ः महिलाएं असंतुष्ट हैं जबकि 06ः महिलाएं पूर्णतया असंतुष्ट थी।

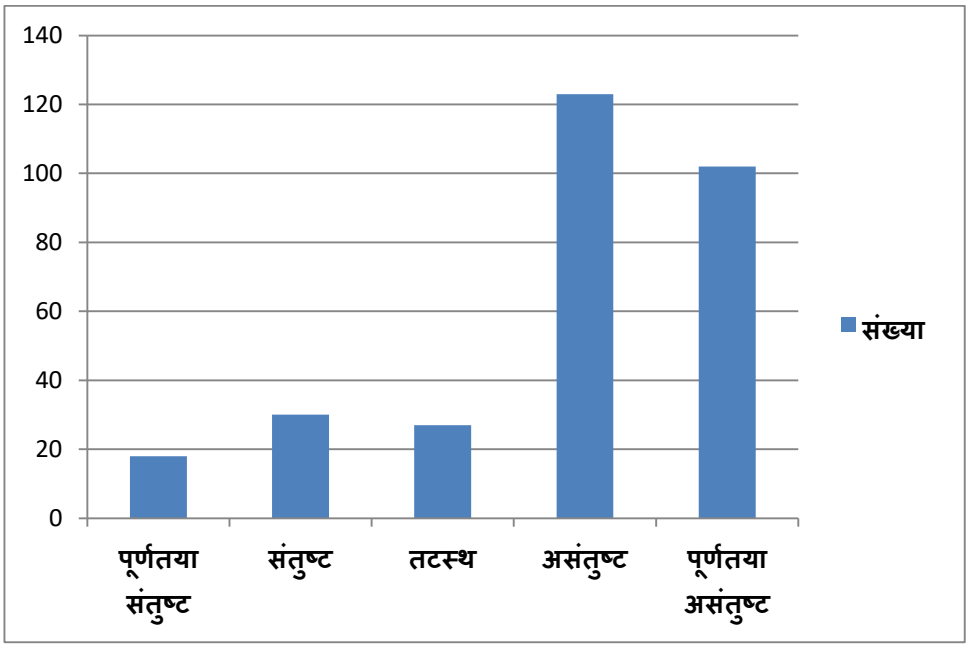

चित्र 5. कार्य स्थल पर उपलब्ध सुविधाओं का चित्र

उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कार्यशील महिलाओं को कार्य स्थल व उसके बाहर जो उपलब्ध सुविधाएं प्राप्त है, कागजों पर तो यह लाभ देखे जा सकते हैं लेकिन व्यावहारिक तौर पर कार्यशील महिलाओं को यह सभी लाभ नहीं मिल पाते हैं । संगठित कार्यशील महिलाओं को जो सुविधाएं प्राप्त हैं, वे असंगठित कार्यशील महिलाओं को उपलब्ध नहीं है जिसके कारण कार्यशील महिलाओं की कार्यक्षमता व स्वास्थ्य पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है।

5. निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि कामकाजी महिलाओं सहित सभी महिलाओं को समानता और सम्मान मिलना चाहिए। महिलाओं को सम्मानजनक व्यवहार दिए बिना, हम वास्तविक अर्थों में प्रगति नहीं कर सकते। महिलाएँ विभिन्न उद्योगों और सेवाओं में विभिन्न पदों पर काम कर रही हैं। वे मानसिक, शारीरिक और आर्थिक रूप से अपने परिवारों का समर्थन कर रही हैं, लेकिन भारतीय कामकाजी महिलाओं को अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में अधिक जटिल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि उन्हें कार्यस्थल और अपने परिवार की दोहरी भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं और दोहरी जिम्मेदारियाँ उठानी पड़ती हैं। उन्हें अपने बच्चों और अपने परिवार के बड़े सदस्यों की देखभाल करनी होती है और घर के सभी कामों को पूरा करने के बाद कार्यस्थल पर जाना होता है।यह कहा जा सकता हैकि इनके कार्यशील जीवन का प्रभाव परिवार पर पड़ रहा है। यह बच्चों और पतियों की जिम्मेदारी भली–भाँति निभा लेती हैं परन्तु सास–ससुर से इनके सम्बन्ध में तनाव आ रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- बंगुरा, प्रिसिला और मैम्बो, एलिस. (2023). महिला शिक्षा में बाधाएँ और परिवार के धीमे सामाजिक–आर्थिक विकास पर इसका प्रभावरू अफ्रीका अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय का एक मामला. शिक्षा, शिक्षण और पाठ्यक्रम अध्ययन की शोध पत्रिका. 1. 23–36. 10.58721ध्तरमजबे.अ1प1.280.

- असदुल्लाह, एमडी और यास्मीन, मीनारा. (2022)। भारत में महिला शिक्षा का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एंड रिव्यूज। 785–788। 10.55248ध्हमदहचप.2022.3.2.9।

- एस, पोन शैलजा और श्रीवास्तव, डॉ. नेहर्शी और रवींद्रन, राम्या। (2022)। संयुक्त परिवार में कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं का पारिवारिक कामकाजरू किशोर परिप्रेक्ष्य में। जर्नल ऑफ फार्मास्युटिकल नेगेटिव रिजल्ट्स। 13. 11131–11136। 10.47750ध्चदत.2022.13ै.09.1302।

- थॉमस, बिगी और पुल्ला, वेंकट। (2022)। महामारी के दौरान महिलाएँ और कार्य–जीवन संतुलनरू एक भारतीय अध्ययन पर रिपोर्टिंग।

- अफौनेह, सईदा और अबुसलहा, सिरिन और सल्हा, सोहेल और देमैदी, मोना और अबू ओबैद, एरिज और अलकूक, वेजदान और खलीफ, जुहैर। (2022)। कामकाजी महिलाओं पर कोविड–19 का प्रभाव।

- रहमान, बुशरा और जफर, मुहम्मद। (2022)। कामकाजी और गैर–कामकाजी महिलाओं में जीवन संतुष्टि। 1. 9–17।

- खरे, शिखा। (2022)। संयुक्त और एकल परिवार में कामकाजी महिलाओं की व्यक्तिगत गतिविधियों से संबंधित निर्णय लेने का तुलनात्मक अध्ययन। 10. ब500–ब506।

- शर्मा, दीपा। (2021)। हरियाणा विश्वविद्यालयों के शिक्षा क्षेत्र में कामकाजी महिलाओं के पेशेवर जीवन पर लैंगिक भेदभाव का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड एडवांस्ड टेक्नोलॉजी। 9. 2008–2013।

- जसरोटिया, अमिती और मीना, जिज्ञासा. (2021). महिलाएँ, काम और महामारीरू भारत में कामकाजी महिलाओं पर कोविड–19 लॉकडाउन के प्रभाव का अध्ययन. एशियाई सामाजिक कार्य और नीति समीक्षा. 15. 10.1111ध्ेंच.12240.

- देशमुख, कल्पना. (2020). कामकाजी महिलाओं पर केंद्रित कार्य–जीवन संतुलन अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजीज एंड मैनेजमेंट रिसर्च. 5. 134–145. 10.29121ध्परमजउत.अ5.प5.2018.236.

- वर्मा, अंकिता. (2020). कामकाजी महिलाएँ और मातृत्व – एक समीक्षा. जीवविज्ञान के इतिहास. 170–178.

- भट्टाचार्जी, सुजयिता. (2020). कामकाजी महिलाओं के लिए दैनिक आवागमन के विकल्प के रूप में श्घर से कामश. मानव भूगोल। 14. 255–265. 10.5719ध्हमव.2020.142.5.

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)